Vol 2 Issue 11 May 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 11, May. 2013
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

GRT

दमोह जिले में स्वतंत्रता आंदोलन (1910 – 1947)

अनिल कुमार गुप्ता , सुनीता गुप्ता

प्राचार्य टाईम्स कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन दमोह
व्याख्याता टाईम्स कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन दमोह

सारांशः

भारतीय राष्ट्रवादिता का जन्म और विकास 19 वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध के वर्षो मे हुआ इस प्रारंभिक चरण मे चेतना के देश की जनता में तेजी के साथ विकसित हुई थी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में दमोह जिले के लोगों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। देश में जो कुछ भी घटित हुआ उसका सीधा असर दमोह पर भी पड़ा। लार्ड कर्जन 1899 में वाइसराय के रूप में भारत आया। लार्ड कर्जन की प्रशासनिक नीति, विदेश नीति, बंगाल विभाजन जैसी अविवेकपूर्ण नीति के परिणामस्वरूप लोगो मे आक्रोश बढ़ता गया जिसके परिणामस्वरूप स्वदेशी और विदेशी आन्दोलन और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार जैसे आन्दोलनों का जन्म हुआ इसका प्रभाव दमोह जिले पर पड़ा। समूचे दमोह जिले में विदेशी वस्तुओं की होलिका जलाई जाने लगी। सन् 1907 के सूरत अधिवेशन में उदारवादी और उग्रवादी दल में प्रत्यक्ष रूप से झगड़ा हो गया था और इतने दिनों से यह उग्रवादी दल कांग्रेस से बाहर ही कार्य कर रहा था। इसी दौरान उग्रवादी दल के प्रमुख बालगंगाधर तिलक के समर्थकों ने राष्ट्रीय मध्यप्रदेश प्रांतीय कांग्रेस समिति का गठन किया। इस समिति में दमोह जिले का प्रतिनिधित्व भैयालाल चौधरी तथा किशोरी लाल ने किया। दमोह जिले मे काग्रेस के नेतृत्व में स्वाधीनता संघर्ष का सूत्रपात सन् 1908 के बंग भंग आन्दोलन से प्रारंभ होता है। दमोह के श्री भैयालाल चौधरी ने बंग भंग आन्दोलन में भाग लिया तथा दमोह की जनता में आजादी के संघर्ष के लिये जागृति पैदा की थी।

प्रस्तावना :–

इसी दौरान भारत में महात्मा गांधी का आगमन हुआ। महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में क्रमबद्ध जन आंदोलन छेड़े जाने लगे। सन् 1918 में प्रथम विश्वयुद्ध जब पूरे जोर पर था, दमोह के सचिव भैयालाल चौधरी ने सेना में भारतीयों की भर्ती के तरीकों की निन्दा करते हुए एक भाषण दिया। भैयालाल चौधरी ने अपने भाषणों मे यहॉ में तक कहा कि सेना मे जबरदस्ती भरती से बचने के लिए गरीब लोगो ने बाजार मे आना ही छोड़ दिया है। अंग्रेजो ने यह भाशण राजद्रोह पूर्ण माना गया। इस कारण भैयालाल चौधरी को भारत प्रतिरक्षा अधिनियम के अधीन 10 अप्रैल 1918 को गिरफ्तार कर लिया गया। यह मामला जिला मजिस्ट्रेट के न्यायलय मे चलाया गया। प्रतिरक्षा परिषद में नाथूराम मोदी, नारायण राव वैध और मनोहर पंत बोबड़े थे। मामले की कार्यवाहियॉ 11 जून 1918 तक चलती रही और निर्णय दिये जाने के पूर्व भैयालाल ने अपने भाषण पर खेद व्यक्त करते हुए सेना में भरती कराने के संबंध मे मदद करने का आश्वासन दिया। उनके आश्वासन के कारण उनको जेल से रिहा कर दिया गया।

इसी दौरान एक ऐसी घटना हुई, जिससे दमोह जिले में राजनैतिक जागृति उत्पन्न होने का संकेत मिला। यह घटना सन् 1920 में दमोह में बधशाला आंदोलन का छेड़ा जाना। दमाह में पशुओं का वध करने के लिए एक बधशाला स्थापित की गई जिसमें प्रतिदिन अनेक पशुओं का वध किया जाता था। पशुओं के इस सामूहिक वध को रोकने के लिए समाचार–पत्रों के माध्यम से सक्रिय प्रचार आरंभ किया गया। दीर्घकालिक संघर्ष एवं संगठित आंदोलन के पश्चात् प्रातीय सरकार पर जोर डाला गया। कि वह दमोह बधशाला, रतौना स्थित बधशाला एवं सागर जिले के राहतगढ़ में स्थित बधशालाओं को बंद कराने का आदेश दे। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप इन बधशालाओं को बंद करना पड़ा। इस आंदोलन की सफल समाप्ति जिले और संपूर्ण राज्य के राजनैतिक जीवन के लिए प्ररेणा स्त्रोत सिद्ध हुई।

दिसंबर 1920 में कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन के उपरान्त, मध्यप्रांत में विदर्भ, नागपुर तथा महाकौशल क्षेत्रो के लिए तीन कांग्रेस समितियॉ बनाई गई। सर्व सम्मति से हिन्दी मध्य प्रान्त कांग्रेस समिति, जिसे बाद में महाकौशल कांग्रेस समिति कहा जाने लगा। इस समिति के प्रथम निर्वाचित होने का सम्मान दमोह के श्री दामोदरराव श्रीखंडे को ही प्राप्त है।

झंडा सत्याग्रह –: झंडा सत्याग्रह की शुरूआत प्रान्तीय सरकार द्वारा नगर पालिका समितियों के द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराये जाने पर पाबन्दी लगाने के आदेश दिए जाने से हुई। इस पाबंदी के कारण झंडा सत्याग्रह एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप लेने लगा, जिसने पूरे भारत देश में राजनैतिक हलचल पैदा कर दी। इस आदेश को चुनौती देने का निर्णय जबलपुर नगर पालिका समिति ने किया। जबलपुर नगर पालिका भवन पर दमोह नगर के ही एक नवयुवक, प्रेमचंद "उस्ताद " ने राष्ट्रीय ध्वज फहराने का अनुकरणीय साहस दिखाया था। इस तरह झंडा सत्याग्रह प्रारंभ करने का श्रेय भी दमोह जिले को प्राप्त हुआ। जल्द ही इस आंदोलन का केन्द्र जबलपुर से नागपुर बन गया जहॉ पर यह सफलतापूर्वक 18 अगस्त 1923 को समाप्त हुआ।

सविनय अवज्ञा– आंदोलन –: कांग्रेस की कार्यकारिणी को 1929 में हुई लाहौर कांग्रेस में यह अधिकार दिया गया था कि वह देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़े। 1930 की मध्य फरवरी मे साबरमती आश्रम में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई जिसमें गॉधी जी को इस बात का अधिकार दिया गया कि वे अपनी इच्छा से जब और जिस जगह से चाहे, सविनय अवज्ञा आंदोलन का शुभारंभ कर सकते है। इसी प्रकार 12

मार्च, 1930 ई. को गॉधी जी ने अपने 78 समर्थको के साथ साबरमती स्थित अपने आश्रम से 240 किमी. दूर डाण्डी के लिए प्रस्थान किया। तब दमोह ने भी संपूर्ण देश की तरह इसमें भाग लिया। नमक कानून तोड़ने के बाद दुकानो तथा शराब की भट्टियों पर धरने दिये गयें। इस आंदोलन में कर ना अदा करना एवं विधानसभा के सदस्यों से विधायक पद से इस्तीफा देने का आह्वान किया गया था। जुलूस निकालना तथा सभा करना तो आम बात हो गयी। ऐसी सभाओं के कारण पुलिस तथा जनता के बीच अनेक मुठभेड़ हुई। 9 जून 1930 को ऐसी एक मुठभेड़ में दो सिपाहियों पर आक्रमण किया गया तथा उन पर पथराव किया गया। 29 जून और 26 जुलाई को भी पुलिस पर आक्रमण किया गया तथा उन पर पर भी पथराव किया गया। इसी दौरान 1 अगस्त 1930 को दमोह में गोकुलचन्द सिंघई को गिरफ्तार कर लिया और उसे जेल ले जाते समय महिलाओं के एक बड़े जूलूस ने न्यायालय के अहाते में प्रवेश किया और डिप्टी कमिश्नर की कार को घेर लिया। काफी कठिनाईयो से पुलिस महिलाओं को हटा पाई और गाड़ी आगे बढ़ी। तथापि दमोह जेल के बाहर विरोध प्रदर्शन काबू से बाहर हो गया और भीड़ पर लाठी चार्ज किया गया। इसी दौरान प्रेमशंकर धगट जो आंदोलनकारी थे को गिरफ्तार किया गया। इस गिरफ्तारी के विरोध मे भी प्रदर्शन किया गया जिस पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया।

8 अगस्त 1930 को दमोह नगर मे गढ़वाल दिवस मनाया गया। शासकीय उच्च शाला भवन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। इस दिवस से नाराज पुलिस ने नगर में आंतक फैला दिया। पुलिस अधीक्षक हुर ने जिला कांग्रेस समिति के सचिव रघुवर प्रसाद मोदी की इतनी निर्दयतापूर्वक पिटाई की कि वे बेहोश हो गए। पुलिस अधीक्षक ने इसी तरह कई लोगो की भी पिटाई की। पुलिस अधीक्षक हुर के इस पाषविक व्यवहार का कारण गॉधी टोपी को माना जाता था, वह गांधी टोपी से बेहद चिढ़ता था। उसे जो कोई भी गांधी टोपी पहने दिख जाता था, वही उसका अगला शिकार बनता था। इसी दौरान दमोह एवं दमोह से बाहर के अनेक चोटी के नेताओं को दमोह जेल मे बंद रखा गया। उनमें से प्रसिद्ध अधिवक्ता अभ्यंकर सेठ गोविन्ददास, बृजलाल बियाणी, शिवदास डागा तथा वामनराव लाखे उल्लेखनीय नाम थे।

5 मार्च 1931 को गांधी इरविन समझौते के रूप में 15 दिन के लंबे विचार – विमर्श के बाद एक दस्तावेज सामने आया। इसे कुछ लोगो ने शांति समझौता और कुछ ने अस्थाई करार नाम दिया। इस समझौते पर कांग्रेस की तरफ से गांधी जी ने और सरकार की ओर से लार्ड इरविन ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते के अनुसार सविनय अवज्ञा आंदोलन वापिस ले लिया गया इसके साथ ही दमोह जिले में भी यह आंदोलन समाप्त हो गया। तथापि इंग्लैण्ड में हुई गोलमेज कान्फ्रेन्स से महात्मा गांधी के लौटने के बाद 4 जनवरी 1932 को उनको फिर से गिरफ्तार किये जाने के बाद सविनय अवज्ञा आंदोलन का द्वितीय चरण शीघ्र ही आरंभ हो गया। लेकिन इस बार प्रशासन इस आंदोलन को दबाने के लिए पूरी तैयारी से बैठा था। जिला कांग्रेस समितियों एवं महाकौशल कांग्रेस कमेटी को अवैध घोषित कर दिया गया। दमोह जिले में उत्पीड़न तथा बहिष्करण अध्यादेश क्रमांक 5 सन् 1932 भी लागू कर दिया गया। इसी अध्यादेश के अंर्तगत प्रेमचन्द सिंघई को सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया। इसके पूर्व भी उनको 1930 के आन्दोलन के सिलसिले में गिरफ्तार किया जा चुका था।

***गांधी जी का दमोह आगमन*–:** सविनय अवज्ञा आंदोलन के साथ ही गांधी जी ने हरिजनों की स्थिति में सुधार करने का कार्यक्रम भी प्रारंभ कर दिया। इस कार्यक्रम हेतु नवंबर 1933 में उन्होने हरिजनो के लिए पूरे देश में दस माह का दौरा प्रारंभ किया। इसी दौरान 2 दिसंबर 1933 का दिन दमोह के इतिहास में स्वर्णिम दिवस था, जब महात्मा गांधी जी के चरण इस भूमि पर पड़े। गांधी जी सड़क मार्ग द्वारा रहली तथा गढाकोटा होते हुए दमोह पहुॅचे। चुंगी नाके जो कि अब दमोह नाके कहलाता है यहॉ पर कांग्रेस कमेटी तथा स्वागत समिति द्वारा उनकी आगवानी की गयी। दमोह की जनता ने भारी उत्साह के साथ उनका स्वागत किया एवं नाके से बाजार के भव्य मंच तक उन्हे विशाल जलूस के साथ में ले जाया गया। इस जलूस के दौरान समूचे रास्तों में उनका अभूतपूर्व स्वागत किया गया, उनके सिर पर छत्र रखा गया, सड़को पर अभ्रक डाला गया और पूरे रास्ते उन पर पुष्प वर्षा की गई।

गांधी जी ने जवाहरगंज में एक विशाल जनसभा को भी संबोधित किया इस जनसभा में मुन्नीलाल वर्मा ने स्वागत भाषण दिया। अन्य स्थानो की भांति दमोह में भी उन्हे थैलियॉ भेट की गई। इस अवसर पर जनसभा में हरिजनो,महिलाओं तथा ईसाईयों के बैठने की व्यवस्था की गई थी। गांधी जी को मान पत्र दिया गया तथा उन्हे बताया गया कि दमोह एक ऐसा जिला है जहॉ पूर्ण शराबबन्दी है। इसका सारा श्रेय जिले के शराबबन्दी आंदोलन को है। यहॉ हरिजनों के साथ छुआछूत का व्यवहार नही किया जाता है। दमोह की अपने आप में एक अनूठी विशेषता यह भी रही कि यहॉ के ईसाई भाईयों ने भी हरिजन उद्धार के लिए थैली भेंट की थी। गांधी जी के भाषण के पश्चात् उनको उपहार में प्राप्त आभूषणों की नीलामी की गई। सभा के पश्चात् गांधी जी ने हरिजन बस्ती में बाल्मीकि समाज के लिए एक मंदिर का शिलान्यास भी किया।

***भारत छोडो आंदोलन*–:** समूचा देश गांधी जी के नेतृत्व में अंतिम संघर्ष की दिशा की ओर निर्बाध रूप से अग्रसर हो रहा था। इसी कड़ी के रूप में 8 अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने "भारत छोड़ो" प्रस्ताव पारित किया। ब्रिटिश सरकार ने इस आंदोलन को कुचलने की पूरी तैयारी कर रखी थी। इस आंदोलन के प्रतिक्रिया स्वरूप 9 अगस्त के तड़के कांग्रेस को अवैध घोषित कर दिया गया और कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर उनको अज्ञात स्थानो पर भेज दिया गया। 9 अगस्त 1942 को ही दमोह के दो प्रमुख नेता रघुबर प्रसाद मोदी एवं प्रेमशंकर घगट को गिरफ्तार कर लिया गया। देखते ही देखते जिले के हजारों कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गये इसके पश्चात् भी नवयुवको में गिरफ्तारी देने का अद्भुत उत्साह था। दमोह निवासी एवं गन कैरेज फैक्टरी में काम करने वाला कर्मचारी कपूरचन्द ने गन फैक्टरी से एक बम चुराकर उसका उपयोग रेल्वे लाइनो को उखाड़ने के लिए किया। जिसके कारण उसको गिरफ्तार कर डेढ वर्ष के कारावास का दंड दिया गया। इस घटना से उत्साही कुछ स्वतंत्रता सेनानियों ने दमोह के पास की रेल्वे लाईनो की जोड़ पट्टियां निकाल दी जिसके परिणाम स्वरूप कुछ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया जिनमे से शमी मोहम्मद और शेर खां प्रमुख थे। इन घटनाओ के बाद तो जैसे विस्फोट करने की होड ही लग गई। शासकीय उच्च शाला दमोह की प्रयोगशाला में बम विस्फोट किया गया जिसमें ज्ञानचन्द श्रीवास्तव, महादेव प्रसाद एवं रामनारायण मिश्र को इस घटना को अंजाम देने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया और कारावास का दंड दिया गया। रावजी भाई पटैल और प्रभुनारायण टंडन ने दमोह में 1942 के आंदोलन में भाग लिया जिसके कारण उन्हे कारावास का दण्ड भुगतना पडा। दमोह की जनता ने स्वतंत्रता के संघर्श में अपने दो नवयुवको का बलिदान देकर आजादी के दीप को जलाये रखा। सिंघई प्रेमचन्द और यशवन्त सिंह नामक वे दो युवक है जो दमोह में आजादी के संघर्श में शहीद हो गये। दमोह नगर के मध्य में निर्मित गांधी चौक आजादी के संघर्श का एक ऐसा जीता जागता स्मारक है जो आजादी के लिए प्राणो की आहुति देने वालो की स्मृति ताजा करता है। इसी स्थान पर 1942 में पुलिस ने स्वतंत्रता सेनानी रघुवर प्रसाद मोदी को जूतों की ठोकरों से इतना पीटा था कि सारा प्रांगण लहुलुहान हो गया था।

मई 1945 में महात्मा गांधी की अस्वस्थता के कारण ब्रिटिश सरकार ने उनको जेल से रिहा कर दिया। इसके शीघ्र पश्चात् ब्रिटेन में श्रमिक दल ने सरकार बनायी। इस नये शासन ने भारत में सन् 1946 के प्रारंभ में आम चुनाव कराये। इस चुनाव में कांग्रेस को जबलपुर मण्डला ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र छोडकर अन्य सभी स्थानो पर अभूतपूर्व विजय प्राप्त हुई।

इस घटना से अंग्रेजी शासन चौंका और उसे 15 अगस्त 1947 को भारत और पकिस्तान को सत्ता सौंपने के लिए विवश होना पडा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –:

(1) तिवारी, गोरेलाल – बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, काशी 1923
(2) त्रिपाठी, काशीप्रसाद – बुन्देलखण्ड का वृहत् इतिहास, टीकमगढ (म.प्र.)1991
(3) त्रिपाठी, मोतीलाल – बुन्देलखण्ड दर्शन, 1998
(4) ठाकुर, भूपति सिंह – स्वतंत्रता संग्राम और हमारे सेनानी, जबलपुर, 1981
(5) भाषा संचालनालय, भोपाल – मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक, सागर
(6) मिश्रा, जयप्रकाश, – द बुन्देला रिवेलियन, संदीप प्रकाशन, दिल्ली, 1982

अनिल कुमार गुप्ता
प्राचार्य टाईम्स कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन दमोह

सुनीता गुप्ता
व्याख्याता टाईम्स कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन दमोह

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net